पी. एम. श्री केंद्रीय विद्यालय
वायु सेना शिविर बीदर
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA AFS BIDAR

कलरव

विद्यालय पत्रिका

2024-25





"ज्ञानदीप के हर पृष्ठ पर उजाले की कहानी है ।
यह हमारे शिक्षकों की लगन और निष्ठा की निशानी है ॥"

"खेलो, सोचो, सीखो हर बार ।
बाल मन की उड़ान अब है तैयार ॥"



श्री धर्मेन्द्र पटले

उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन

बेंगलूरु संभाग

प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकगण एवं पाठकगण,

सप्रेम नमस्कार!

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि **पी. एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, वायु सेना शिविर, बीदर** द्वारा प्रकाशित विद्यालय पत्रिका का यह अंक विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति और उत्कृष्टता का अद्भुत संगम प्रस्तुत कर रहा है।

विद्यालय पत्रिका किसी भी शैक्षणिक संस्थान के शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का जीवंत प्रतिबिंब होती है। यह विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को उजागर करने, विचारों को साझा करने एवं भाषा कौशल को निखारने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन सदैव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार, मूल्यों एवं समग्र विकास को प्राथमिकता देता आया है। मुझे प्रसन्नता है कि **पी. एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, वायु सेना शिविर, बीदर** इन उद्देश्यों को पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से साकार कर रहा है।

मैं प्राचार्य, समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को इस रचनात्मक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मेरी कामना है कि यह पत्रिका सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बने और विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे।

शुभकामनाओं सहित,
श्री धर्मेन्द्र पटले
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु



श्री आर. प्रमोद

सहायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन
बेंगलूरु संभाग

प्रिय छात्रों, शिक्षकगण, अभिभावकों एवं सुधी पाठकों,

सप्रेम नमस्कार!

पी. एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, वायु सेना शिविर, बीदर द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका का नवीन अंक देखकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका विद्यालय की रचनात्मक गतिविधियों, शैक्षणिक उपलब्धियों और विद्यार्थियों की प्रतिभा का सजीव दस्तावेज है।

विद्यालय पत्रिका न केवल छात्रों की लेखन क्षमता, कल्पनाशक्ति एवं विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है, बल्कि यह उनके व्यक्तित्व विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी होती है। यह देखकर गर्व होता है कि विद्यालय नेतृत्व और शिक्षकगण विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए पूर्ण निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहे हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, विशेष रूप से पी. एम. श्री विद्यालयों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की दिशा में निरंतर अग्रसर है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल विद्यालय की उपलब्धियों को दर्शाएगी, बल्कि अन्य छात्रों और शिक्षकों को भी प्रेरित करेगी।

मैं इस रचनात्मक प्रयास के लिए प्राचार्य, सम्पादकीय दल, शिक्षकों और सभी छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,
श्री आर. प्रमोद
सहायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु



Air Commodore Parag Lall, AOC

अध्यक्ष

विद्यालय प्रबंधन समिति

वायु सेना शिविर, बीदर

प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं पाठकों,

सप्रेम नमस्कार!

विद्यालय पत्रिका का यह नवीन अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका न केवल विद्यालय की रचनात्मकता, नवाचार एवं शैक्षणिक उपलब्धियों का दर्पण है, अपितु विद्यार्थियों की प्रतिभा और व्यक्तित्व विकास का भी सशक्त माध्यम है।

शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र में सद्गुणों, अनुशासन और संस्कारों के विकास की आधारशिला रखती है। मुझे गर्व है कि हमारे विद्यालय में शिक्षा के इन सभी आयामों पर समान रूप से बल दिया जाता है।

विद्यालय परिवार, विशेष रूप से प्राचार्य, शिक्षकगण और अन्य सहयोगी सदस्य, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु जिस समर्पण और निष्ठा से कार्य कर रहे हैं, वह प्रशंसनीय है। मैं विद्यार्थियों को भी बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपनी लेखनी और रचनात्मकता से इस पत्रिका को समृद्ध किया है।

आइए, हम सभी मिलकर शिक्षा के इस पवित्र पथ पर निरंतर अग्रसर रहें और विद्यालय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अपना योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित,
Air Commodore Parag Lall, AOC
अध्यक्ष,
विद्यालय प्रबंधन समिति
वायु सेना शिविर, बीदर



श्री कमलेश रौतेला

प्रधानाचार्य

पी. एम. श्री केंद्रीय विद्यालय,

वायु सेना शिविर, बीदर

प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकगण एवं पाठकगण,

सप्रेम नमस्कार!

पी. एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, वायु सेना शिविर, बीदर की वार्षिक पत्रिका के इस नवीन अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका न केवल हमारे विद्यालय की शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की उपलब्धियों का दस्तावेज है, बल्कि यह हमारे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, चिंतनशीलता और अभिव्यक्ति कौशल को उजागर करने वाला सशक्त मंच भी है।

हमारा प्रयास सदैव यह रहा है कि विद्यार्थियों को एक ऐसा शैक्षणिक वातावरण प्रदान किया जाए जहाँ वे न केवल ज्ञान प्राप्त करें, बल्कि जीवन मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और नवाचार की भावना से भी ओत-प्रोत हों। इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को साझा करने का अवसर प्राप्त होता है, जो उनके आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होता है।

मैं विद्यालय के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा विशेष रूप से इस पत्रिका के संपादकीय दल को इस प्रयास के लिए हृदय से बधाई देता हूँ। मेरी शुभकामनाएँ हैं कि यह पत्रिका न केवल एक रचनात्मक दस्तावेज बने, बल्कि सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत भी सिद्ध हो।

शुभकामनाओं सहित,
श्री कमलेश रौतेला
प्रधानाचार्य
पी. एम. श्री केंद्रीय विद्यालय,
वायु सेना शिविर, बीदर

सम्पादक समिति

अध्यक्ष	**श्री कमलेश रौतेला** **(प्रधानाचार्य)**
हिन्दी अनुभाग	1. श्रीमती शालिनी दिनेश (स्नातकोत्तर शिक्षक) 2. श्री महेंद्र कुमार (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक) 3. श्रीमती प्रतिमा सिंह (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक)
संस्कृत अनुभाग	श्री गिरीश भट्ट (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक)
आङ्ग्ल अनुभाग	1. श्री वैजिनाथ पुजारी (स्नातकोत्तर शिक्षक) 2. श्री कृष्णकांत पलनाटे (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक)
सहकार	सभी शिक्षक गण एवं छात्र

अनुक्रमणिका

अ.सं.	विषय	लेखक	पु.सं.
	हिंदी अनुभाग		1-27
01	न्याय – अन्याय	शालिनी दिनेश, स्नातकोतर शिक्षक हिंदी	1
02	धर्म और इंसानियत	गुलाम मुस्तफ़ा, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी	1
03	परिणाम और प्रयास करने दो	आकाश यादव, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक गणित	2
04	दोस्ती कर इस दुनिया से यार	मंगेश दहिकांबले, प्राथमिक शिक्षक	3
	विद्यार्थियों की आवाज		
05	जंगल का सफर	वैष्णवी, कक्षा - ग्यारहवीं	4
06	हमारी हिंदी भाषा	कृष्णवेणी, कक्षा - सातवीं 'ब'	5
07	ऐसा महान तू बन	अर्णव सिंह, कक्षा - आठवीं 'अ'	6
08	शिक्षक	स्नेहा, कक्षा - नवीं 'अ'	7
09	अब तो आगे बढ़ना होगा	अर्णव सिंह, कक्षा - आठवीं 'अ'	7
10	हौसले की उड़ान	जानवी, कक्षा - सातवीं 'स'	8
11	इन आँखों ने क्या न देखा...?	खुशबू, कक्षा - सातवीं 'स'	9
12	सोनाली का कुआँ	नागेन्द्र पाल सिंह, कक्षा – नवीं 'स'	9
13	ज़िंदगी	श्रेया रौतेला, कक्षा - सातवीं 'ब'	10
14	हिंदी दिवस पर कविता	अभिषेक ए.,कक्षा - सातवीं 'ब'	11
15	पेड़	ऐश्वर्या बेद्रे, कक्षा - आठवीं 'अ'	11
16	विद्यालय	आदर्श, कक्षा - आठवीं 'अ'	12
17	कोरा कागज	भवानी, कक्षा - आठवीं 'ब'	13
18	हे पार्थ	अर्णव सिंह, कक्षा - आठवी 'अ'	13
19	मेरी मां	अभिषेक चौधरी, कक्षा – नवीं 'अ'	14
20	पिता	जानवी, कक्षा - सातवी 'स'	15
21	वह अध्यापिका	कृष्णवेणी, कक्षा – सातवीं 'ब'	16
22	दुख और किस्मत वाला लड़का	सैयद जाहिर हुसैन, कक्षा - सातवीं 'ब'	16
23	समय	साकेत, कक्षा - आठवीं 'ब'	18

अ.सं.	विषय	लेखक	पु.सं.
24	हिन्दी	अंजली, कक्षा – आठवीं 'ब'	18
25	पहेलियां	ऐश्वर्या, कक्षा – छठी 'ब'	19
26	इन आंखों ने क्या न देखा.....	खुशबू, कक्षा – सातवी 'स'	20
27	क्लास मॉनिटर	स्नेहा, कक्षा – नवीं 'अ'	20
28	हमारा भारत	श्रेया, कक्षा - सातवी 'ब'	21
29	हिन्दी	हर्षिता, कक्षा – सातवीं 'ब'	22
30	पिता	जान्हवी, कक्षा - सातवीं 'स'	22
31	वीर बाल दिवस	ऋषिका, कक्षा - नवीं 'स'	23
32	मेरा देश	शांभवी, कक्षा – नवीं 'स'	24
33	कुम्भ मेला	अर्जुन कुमार, कक्षा - आठवीं 'ब'	24
34	पौराणिक कथाएं	अर्जुन कुमार, कक्षा - आठवीं 'ब'	25
35	सूरज निकला मिटा अंधेरा	श्रावणी, कक्षा – छठी 'अ'	26
36	मेरे गुरुजन	हर्षदा गुरुस्थले, कक्षा - छठी 'अ'	26
	संस्कृत अनुभाग		27-31
37	एकता	शाम्भवी, कक्ष्या - नवमी 'अ'	27
38	गर्वभञ्जनम्	आत्मारूढः, कक्ष्या - नवमी 'ब'	28
39	लक्ष्यनिर्धारणम्	अमूल्या, कक्ष्या - नवमी 'स'	29
40	विद्यार्थिजीवनम्	मानसी कणजीकर, कक्ष्या - नवमी 'अ'	30
41	स्त्रीशिक्षायाः महत्त्वम्	सन्निधि कुलकर्णी, कक्ष्या - नवमी 'स'	30
	English Department		32-44
42	COLOSSAL GULF !	Ms. Shivani Doonga, PRT	32
43	ALL ABOUT ME	Mrs. Rina Bardhan, PRT	32
44	Mental Health and its Significance in Education	Bal Krishan Tiwari, PGT (Biology)	33
45	Lord Basavanna	Pranav Class 6B	34
46	Water, a mystery	Saksham Kumar Varma Class 7C	35
47	Rise Beyond	Janavi Class 7C	35
48	Canvas of Dreams	Vaishnavi, Class 11	36

अ.सं.	विषय	लेखक	पु.सं.
49	TIPS TO FOCUS IN STUDIES	Mahesh, Class 8A	38
50	Whispers of the Sea	Deepak, Class 8B	38
51	Inspiring Thoughts	Deependra Choudhary, Class 7	39
52	MY TEACHER	Tejaswini M Battur, Class 2A	40
53	A TEACHER	Ananya M Battur, Class 5A	40
54	Don't Give up	Saiprasad Govind Jeje Class 5	40
55	A Great teacher	Nameer Zainab, Class 5A	41
56	Puzzle	Arnav Bhardwaj, Class 5A	42
57	MY SCHOOL	Vishwadeep, Class 3A	42
58	Child Labour	Pratiksha metre, Class 3A	42
59	TREE	Shaik Ruman, Class 3C	43
60	RIDDLES	Parikshita, Class 5C	43
61	Washing Day Washing Day	Divyanshi, Class 4B	43
62	Report on Educational excursion to IIT Hyderabad	Prachi	43
63	चित्र अनुभाग		45-51

हिंदी अनुभाग

न्याय - अन्याय

शालिनी दिनेश
स्नातकोतर शिक्षक हिंदी

एक आग है सीने में, जो यूं ही ना बुझेगी
ग़र ना मिला न्याय, तो अन्यायी को भी ले डूबेगी
वादा है खुद से, हार नहीं मानेंगे
खुद जलेंगे लपटों में, तो उसको भी जलाएंगे |
न बनी बात सीधे से, तो जुनून भी दिखलाएंगे
है हम ठंडी छाया, तो अंगारों सी धूप भी बन जाएंगे
समय बहुत बीत चुका, अब दर्पण भी दिखलाएंगे
वादा है खुद से, हार नहीं मानेंगे
खुद जलेंगे लपटों में तो उसको भी जलाएंगे |
जीवन की सच्चाई है, बिन मांगे न मिलता न्याय है
गिरेंगे , तो फिर उठेंगे , लड़ेंगे अपने हक़ की लड़ाई
यही संतुष्ट जीवन की भरपाई है
वादा है खुद से, हार नहीं मानेंगे
खुद जलेंगे लपटों में तो उसको भी जलाएंगे |

*****

धर्म और इंसानियत

गुलाम मुस्तफ़ा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी

धर्म और इंसान एक-दूजे से अलग नहीं,
उसकी आत्मा का अलग रंग है यही
न कोई दीवार, धर्म तो प्रेम का विचार,
धार्मिक उन्माद में बह, मत करो प्रचार।

इंसानियत से बड़ा धर्म कोई दूजा नहीं,
जाति, भाषा इसमें फर्क कोई है नहीं।
जो जोड़ दे दिलों को, वही होता सही,
जो बांटते राह में, धर्म तो बिलकुल नहीं।

भगवान रहते हर दिल में बन इंसानियत,
धर्म और इंसानियत, एक दूजे की काबिलियत।
या उसकी आत्मा का ही अलग रंग सही,
न कोई ईंट, न दीवार, धर्म तो प्रेम की बही।

भगवान भी बसें हर दिल में बन प्रेमी छाँव,
न मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारे की ठांव।
तू झुके जहाँ वहीं खुदा मिलेगा ये मेरे बंदे,
तेरे कर्मों में ही तेरा धर्म खिलेगा, धरे है रन्दे।

*****

परिणाम और प्रयास

आकाश यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक गणित

समाज में एक बहुत ही प्रचलित कथन है
"अंत में सिर्फ़ परिणाम देखे जाएंगे प्रयास नहीं....."
बात कुछ हद तक सही भी है क्योंकि परिणाम ही भविष्य की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अच्छे और सफल परिणाम आशावादी बने रहने की प्रेरणा देते हैं।
पर बुरे परिणाम जिनको तथाकथित सफल लोग असफल परिणाम भी कहते हैं उनका क्या? क्या सच में ऐसा परिणाम जिसकी चाह नहीं की गई हो वो प्राप्त हो जाए तो उसे असफलता में गिना जाता है। बेशक ये परिणाम बुरे हो सकते हैं पर असफल नहीं। क्योंकि "**परिणाम क्षणिक उपलब्धि मात्र हैं और प्रयास जिया गया जीवन का हिस्सा**।"और प्रयास कभी भी असफल नहीं होते। प्रयास से आपको हमेशा कुछ सीखने को ही मिलता है, कुछ समझ विकसित ही होती है।
उदाहरण के लिए एक दौड़ 10 कि.मी. की है और उसमें 100 लोग भाग लेते हैं तथा कुल विजेता 10 ही हैं। अब दसवें स्थान पर आने वाले व्यक्ति के ठीक कुछ समय बाद ग्यारहवें स्थान पर आने वाले व्यक्ति का क्या? क्या सिर्फ़ परिणाम असफल होगा या प्रयास भी? स्वयं विचार कीजिए। अतः अगर परिणाम असफल तब भी व्यक्ति आगे सफल हो सकता है किन्तु प्रयास ही असफ़ल हुआ तब वह कभी सफल नहीं होगा। इसलिए प्रयास निरंतर करते रहिए। उम्मीद कभी मत छोड़िये।

करने दो

खुली खुली सी अनसुलझी सी गांठें हैं,
चाहो तो इसे रहने दो, मुझे करने दो
मुझे चलने दो, मुझे मिलने दो
मुझे जलने दो, मुझे जीने दो

बस मुझे हँसने दो।
नतीजा तुम्हें पता नहीं तो
सोचो सोचो सोचो
तुम सोचते रह जाओगे,
मैं करके निकल जाऊँगा।
तुम देखते रह जाओगे,
मैं कुछ यूं बन जाऊंगा।
तुम स्वपनों में रहोगे,
मैं उसमें भी आजाऊँगा।
तुम्हे बताऊंगा, दिखाऊंगा,
चिल्लाऊंगा, हँसाऊँगा,
रुलाऊँगा-रुलाऊँगा।
तुम बूंद-बूंद बस देखोगे,
मैं आसमाँ पी जाऊँगा।

*****

दोस्ती कर इस दुनिया से यार

मंगेश दहिकांबले
प्राथमिक शिक्षक

कर दोस्ती इस दुनिया से यार
ये दुनिया हमें बहुत सिखाती है,
पहन मुखौटा मुस्कान का नकली,
ये अपना रूप छुपाती है असली।
ये अंदर से बेदर्द है पर,
झूठा हमदर्द दिखाती है,
कर दोस्ती इस दुनिया से यार
ये दुनिया हमें बहुत सिखाती है ॥ १॥
यहाँ विश्वास के धागे टूटते हैं,
मतलब से नाते जुडते है,
वक्त-वक्त पर ये अपना
नया रंग दिखाती है
कर दोस्ती इस दुनिया से यार
ये दुनिया हमें बहुत सिखाती है ॥ २॥

यहाँ हर व्यक्ति तुझे परेशान नजर आता है...
बेहतर कल बनाने में वह
आज का सुनहरा मौका गंवाता है।
देख ये घड़ी की रफ्तार कभी नहीं रुकती,
तेरी आज की यह परेशानी कल नही टिकती।
जिंदगी हर रोज एक नया गीत गाती है
कर दोस्ती इस दुनिया से यार
ये दुनिया हमें बहुत सिखाती है || ३||
तू अच्छे को स्वीकार कर
छोड़ दे वह चीज जो लगती तुझे बेकार है..
अपना ले तू उस मूर्तिकार का नजरिया जिसे
काले पत्थर में भी सुंदर मूर्ति नजर आती है
कर दोस्ती इस दुनिया से यार
ये दुनिया हमें बहुत सिखाती है || ४ ||
हर अंधेरी रात के बाद एक नई सुबह आती है,
ग्रीष्म ऋतु के बाद जैसे वर्षा हरियाली लाती है।
तू रंग दे इसमें खुदको जो रंग तुझको भाता है,
चमक आकाश में संध्या तारा बनकर
जो शीतल प्रकाश देता है,
मैं याद दिला दूं तुझको,
ये जिंदगी बार-बार सबके नसीब नही होती है,
कर दोस्ती इस दुनिया से यार,ये दुनिया हमें बहुत सिखाती है।
कर दोस्ती इस दुनिया से यार,ये दुनिया हमें बहुत सिखाती है ।।५।।

*****

विद्यार्थियों की आवाज

जंगल का सफर

वैष्णवी
कक्षा - ग्यारहवीं

चलो चलें उस जंगल में, जहां अंधियारा डेरा है,
हर कोना एक रहस्य, हर पेड़ गहरा है।
पत्तों की सरसराहट में छिपा कोई गान,
जैसे बुला रही हो हमें, प्रकृति की पहचान।

घने वृक्षों के नीचे छांव का बसेरा,
हर कदम पे लगता, ये सफर है सुनहरा।
राहें अनजानी, मगर दिल में उमंग,
हर मोड़ पे मिलती, एक नई तरंग।

कभी झरने की कल-कल, कभी पक्षियों का गान,
लगता जैसे छू लिया हो स्वर्ग का मैदान।
पगडंडियों पर चलते, दिल में एक जूनून,
हर पल महसूस होती, प्रकृति की धुन।

अचानक एक गुफा दिखी, भयानक और गहरी,
साहस ने कहा, "चलो, कहानी नई गढ़ी।"
अंदर मिला अंधेरा, और सन्नाटा घना,
पर कदम रुके नहीं, था दिल में विश्वास बना।

दीवारों पर दिखे चित्र, जो बोले थे कहानियां,
पुरखों की रचनाएं थीं, छुपाए अनगिनत निशानियां।
गुफा के पार खुला एक दृश्य अनमोल,
हरी-भरी घाटी, जैसे सजी हो रंगों का मोल।

सफर ये सिखा गया, हर डर का अंत है,
हौसले की रोशनी से, हर अंधेरा संत है।
जंगल की इस यात्रा ने दिल को दिया सुकून,
प्रकृति के करीब रहना, जीवन का है जुनून।

**तो बढ़ाओ कदम, प्रकृति से लो सीख,
साहस से जीत लो, हर अनदेखी रेख।**.

*****

हमारी हिंदी भाषा

कृष्णवेणी
कक्षा - सातवीं 'ब'

भारत मां की शान है हिंदी,
हम सब का अभिमान है हिंदी,
सबसे प्यारी, सबसे न्यारी,
हिंदी है भारत मां की बिंदी ।।
जन-जन की भाषा है हिंदी,

भारत की आशा है हिंदी,
हिंदी को हम देंगे सम्मान,
क्योंकि हिंदी है हमारी पहचान ।।
बच्चों का पहला शब्द है हिंदी
मां के प्रेम का साया है हिंदी
सरस मीठी भाषा ऐसी,
ज्यों कोयल की वाणी,
भाषाओं में शिरोमणि है मेरी हिंदी वाणी ॥
हिंदुस्तान का गर्व है हिंदी,
एकता की अनोखी परंपरा है हिंदी,
भारत मां की शान है हिंदी,
हम सब का अभिमान है हिंदी।।

*****

ऐसा महान तू बन

अर्णव सिंह
कक्षा - आठवीं 'अ'

ऐसा महान तू बन,
जो सागर जैसा शांत हो,
पर्वत सम्मान विक्रांत हो,
जिसका काबू में हो मन,
ऐसा महान तू बन ।।
जो दीनों को करता दान है,
जिसका दिल धरती सा महान है,
जो मर्यादा का मान करें ,
जो जीवों का सम्मान करें,
ऐसा महान तू बन ।।
अपनों का रक्षक बन जा तू ,
दुश्मन का भक्षक बन जा तू ,
जिसमें वेदों का ज्ञान हो,
जिसे आता गीता कुरान हो,
ऐसा महान तू बन ।।

जिसकी सोच जगत से विशाल हो,
जिसका क्रोध महा विकराल हो,
जो प्रेम की भाषा जानता हो,
करता वही जो ठानता हो,
ऐसा महान तू बन ।।

*****

शिक्षक

स्नेहा
कक्षा - नवीं 'अ'

जीवन में जो राह दिखाए,
नीति पर चलना सिखाए,
माता-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता,
वह मेरा पथ प्रदर्शक है,
सीखी जिससे कर्तव्य निष्ठा,
वह मेरे मन को भाता है,
वह शिक्षक कहलाता है ।।
कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे यह इच्छा,
काश मैं बन पाऊं उन जैसा ।।

*****

अब तो आगे बढ़ना होगा

अर्णव सिंह
कक्षा - आठवीं 'अ'

अब तो आगे बढ़ना होगा,
अपने खातिर लड़ना होगा ,
कुछ बातों को छोड़कर, और कुछ को करके माफ हमें,
अब तो आगे बढ़ना होगा ।।
राह में आई बाधाओं से,
एक साथ हमें लड़ना होगा,
तूफानों और चट्टानों को,चीरकर निकलना होगा,

अब तो आगे बढ़ना होगा।।
इस भय को पीछे छोड़कर,
विजय का तू अब शोर कर,
अपनी मेहनत तू घनघोर कर,बस इसी लगन को रखना होगा,
अब तो आगे बढ़ना होगा ।।
तू डर मत उस कंकड़ से,
तुझे पर्वत को भी कुचलना होगा,
कायर की भांति भाग मत, तुझे वीरता पथ पर चढ़ना होगा
अब तो आगे बढ़ना होगा।।
तेरी मुट्ठी में होगा जगत,
लेनी होगी तुझे एक शपथ, दया प्रेम के भाव से,
अहंकार से बिछड़ना होगा,
अब तो आगे बढ़ना होगा ।।

*****

हौसले की उड़ान

जानवी
कक्षा - सातवीं 'स'

हौसले बुलंद कर, आसमान को छू ले,
हर मुश्किल को तू अपनी ताकत से झूले।
सपने तेरे छोटे नहीं, खुद पर ऐतबार कर,
रुकावटों के पार है मंज़िल, बस इनका सामना कर।

हार से घबराना नहीं, ये तो जीत का हिस्सा है,
तेरे जुनून में छिपा हर जीत का किस्सा है।
चल तू आगे, राहें खुद ही बनती जाएंगी,
तेरे जज्बे को देखकर मुश्किलें भी सिर झुकाएंगी।

हर सुबह नई है, एक नई कहानी लेकर,
हर पल तेरा है, बस तू दिल से जीकर।
जिंदगी के हर मोड़ पर तू खुद को याद दिला,
"मैं कर सकता हूँ, मैं करूँगा, और तू कर दिखा!"

तू वो चिंगारी है, जो आग बनकर चमकेगी,
तू वो सितारा है, जो अम्बर में दमकेगी।
तो बढ़ते चल, न रुक, न थक,
तू खुद में एक प्रेरणा है, तू खुद में हैं एक सबक।

*****

इन आँखों ने क्या न देखा.....?

खुशबू
कक्षा - सातवीं 'स'

हार से लेकर सफलता तक,
इन आँखों में क्या न देखा,
बस उसे स्वीकारना न सीखा।
गलत से लेकर असत्य तक,
इन आँखों ने क्या न देखा,
बस उसे रोकना न सीखा।
भूल से लेकर चूक तक,
इन आँखों में क्या ना देखा,
बस उसे सुधारना न सीखा।
गंदगी से लेकर स्वच्छता तक,
इन आँखों ने क्या न देखा,
बस उसे साफ करना न सीखा।
इन आँखों ने क्या न देखा,
बस यही काम करना न सीखा,
बस यही काम करना न सीखा ।।

*****

सोनाली का कुआँ

नागेन्द्र पाल सिंह
कक्षा – नवीं 'स'

एक बार एक गांव में एक लड़की का जन्म हुआ,जिसकी सुंदरता इतनी मनमोहक थी कि,उसके सामने सोने का कोई मोल नहीं ।

इसलिए उसका नाम सोनाली रख दिया गया। कुछ सालों बाद जब वह 19 साल की हुई तो उसकी शादी रामगढ़ नाम के एक गाँव में कर दी, जो कि राजस्थान के रेगिस्तान में स्थित है। शादी के बाद उसके दो बेटे हुए और उसका जीवन बहुत सुखी था। लेकिन उसे एक परेशानी थी कि उसके गाँव में

एक भी कुंआँ या पानी का साधन नहीं था, इसलिए उसे पानी के लिए एक दूसरे गाँव में जाना पड़ता था,जो घर से 15 किलोमीटर दूर थाl तो उसका पूरा दिन पानी लाने में ही बीत जाता था। एक बार जब वह पानी लेने के लिए जा रही थी तो रास्ते में उसे एक पेड़ दिखा जिसके नीचे बहुत सारे चूहों ने अपने बिल बना रखे थेl तो उसने सोचा यहाँ अगर चूहों ने अपने बिल बना रखे हैं, तो आस पास कहीं पानी का साधन अवश्य होगा।

उसके बाद सोनाली ने ठान लिया कि अब वह उस पेड़ के नीचे एक कुआँ खोदेगी। फिर उसने अपने बेटों को अपनी मदद करने के लिए कहा, लेकिन बेटों ने उसे मना कर दिया। फिर सोनाली अकेले कुआँ खोदने निकल पड़ी।

उसने तीन दिनों तक लगातार कुआँ खोदा, तीन दिनों बाद एक भयंकर तूफान आया, जिससे वह कुआँ रेत से भर गया। सोनाली की मेहनत पर पानी फिर गया किंतु उसने हार नहीं मानी | सोनाली को अकेला संघर्ष करते देख अब उसके बेटों ने भी उसकी मदद करने की ठान लीl अब तीनों ने मिलकर कुआँ खोदना प्रारंभ किया तो सोनाली के पति ने भी उसकी मदद की। सात दिनों के कठिन परिश्रम के बाद चारों सफल हुए । कुएँ से पानी सफलतापूर्वक निकलने लगा, जब गाँव वालों को पता चला तो उन्होंने उस कुएँ का नाम सोनाली का कुआँ रख दिया।

लगातार मेहनत से ही सफलता मिलती है।

*****

ज़िंदगी

श्रेया रौतेला
कक्षा - सातवीं 'ब'

ज़िंदगी कैसी है यह ज़िंदगी,
बहुत लोग आते हैं, बहुत लोग जाते हैं।
बहुत कुछ सिखा जाते हैं,
और कुछ पल रुककर फिर कहीं गुम जाते हैं।

ज़िंदगी कैसी है यह ज़िंदगी,
कुछ बुरे पल लाती है तो,
कुछ अच्छे पल भी लाती है,
पर कभी भी बीते हुए पल नहीं लौटाती है।।

ज़िंदगी कैसी है यह जिंदगी,
कभी तो लोगों का मेला है,

और कभी दिल अकेला है,
कभी तो रात काली है,
और कभी होली दिवाली है।।

ज़िंदगी कैसी है यह ज़िंदगी,
यह सोचकर नहीं रुकेंगे हम,
यह सभी तो है जीवन के रंग,
तो दिल में है किस बात का गम,
हमें तो मुस्कुराकर जीना है,
और मुस्कुराकर ही जिएंगे हम।।

*****

हिंदी दिवस पर कविता

अभिषेक ए.
कक्षा - सातवीं 'ब'

सबसे प्यारी, सबसे न्यारी,
हिंदी है राज़भाषा हमारी।
हमको लगती सबसे प्यारी,
हिंदी से ही पहचान हमारी।
हिंदी है हम सबको प्यारी,

यह सम्मान की है अधिकारी।
हमको हैं सब भाषाएँ प्यारी,
पर हिंदी ही है जान हमारी।
यह जन-जन की है दुलारी,
क्योंकि हिंदी है पहचान हमारी।

*****

पेड़

ऐश्वर्या बेद्रे
कक्षा - आठवीं 'अ'

ये तो इतने हरे भरे हैं
इनसे ही संसार बना है
क्यों ये लोग छीन लेते हैं इनकी साँसें

क्या किया है इन मासूम पेडों ने
ये तो इतने हरे भरे हैं
इनसे ही संसार बना है
देते हैं ये सबको हवा
मिटाते हैं ये सब की भूख
ये तो इतने हरे भरे हैं
इनसे ही संसार बना है
मिटाते हैं ये हमारी बीमारियाँ
देकर औषध अपनी
ये तो इतने हरे भरे हैं
इनसे ही संसार बना है
छीनो मत इनकी साँसें
और मत छीनो खुद की साँसें
ये तो इतने हरे भरे हैं
इनसे ही संसार बना है
*****

विद्यालय

आदर्श
कक्षा - आठवीं 'अ'

विद्यालय हमारा मंदिर है,
और अध्यापक हैं उसके भगवान ।
सभी पुस्तकों और कॉपियों में
मिलता है हमको सारा ज्ञान ॥
हम हों इस विद्या के काबिल
बनें हम एक सफल इंसान ।
छोटों को प्यार देना सीखें
और बडों का हम करें सम्मान ॥
बडे होकर हर इंसान,
विद्यालय का रोशन करे नाम।
जीवन में मिले प्रसिद्धि,
ऐसा हम कोई काम करें ॥
*****

कोरा कागज

भवानी
कक्षा - आठवीं 'ब'

मैं तो कोरा कागज था बस,
सब अपनी कहानी लिखने गए।
कुछ ने अपना बचपन खोला,
कुछ अपनी जवानी लिखते गए।
किसी ने अपने राज छुपाए,
कोई हाए - दिल भी बोल गया। -
कुछ ने सुबह के गीत लिखे,
तो कुछ शाम सुहानी लिखते गए।
अनमोल किया किसी ने मुझे,
बेमोल कभी मैं बिकता रहा।
सब अपने मन की कहते रहे
सब अपनी कहानी लिखते गए।
मुझको वह साथी न मिला,
जो मेरा दर्द समझता भी।
मेरी आंख के पानी से ही,
वह अपनी कहानी लिखते गए।।

*****

हे पार्थ

अर्णव सिंह
कक्षा - आठवी 'अ'

तलवार, धनुष और पैदल सैनिक कुरुक्षेत्र मे खड़े हुये,
रक्त पिपासू महारथी इक दूजे सम्मुख अड़े हुये।

कई लाख सेना के सम्मुख पांडव पाँच बिचारे थे,
एक तरफ थे योद्धा सब, एक तरफ समय के मारे थे।

युद्ध आरंभ की प्रतिक्षा में सारे ताक रहे थे जी,
और पार्थ के रथ को केशव स्वयं हाँक रहे थे जी।।

रणभूमि के सभी नजारे देखन मे कुछ खास लगे,
माधव ने अर्जुन को देखा, अर्जुन उन्हे उदास लगे।

कुरुक्षेत्र का रण एक पल मे तभी सजा डाला,
शंख उठा कृष्ण ने मुख से लगा बजा डाला।

हुआ शंखनाद जैसे ही सबका गर्जन शुरु हुआ,
रक्त बिखरना हुआ शुरु और सबका मर्दन शुरु हुआ।

उठो पार्थ गांडीव उठाओ ,
जग को अपना कौशल दिखलाओ।

सुनी बात माधव की तो अर्जुन का चेहरा उतर गया,
एक धनुर्धारी की विद्या मानो चुहा कुतर गया।

बोले पार्थ सुनो कान्हा - जितने ये सम्मुख खड़े हुये ,
हम तो इन से सीख-सीख कर सारे भाई बड़े हुये।

ये जितने गुरुजन खड़े हुये है सभी पूजने लायक है,
माना दुर्योधन दुसासन थोड़े से नालायक है।

मैं अपराध क्षमा करता हूँ, बेशक हम ही छोटे है,
ये जैसे भी है आखिर माधव, सब ताऊ के बेटे है।।

*****

मेरी मां

अभिषेक चौधरी
कक्षा – नवीं 'अ'

मां,तू ऐसा कैसे कर पाती है,
हमसे निकला न जाए धूप में,
और तू नंगे पाँव पूरा आंगन फिर जाती है,
मां,तू ऐसा कैसे कर पाती है।

हम तो आलस के मारे हैं,
बिखरे सारे काम हमारे हैं,
मगर तू पूरा घर कैसे संभाल पाती है,
मां,तू ऐसा कैसे कर पाती है।
हमें तो सिर्फ विद्यालय जाकर आना है,
मगर तुझे तो पूरा घर बनाना है,
मां,तू ऐसा कैसे कर पाती है।
बात तो तब समझ में आई जब,
हम छुट्टियों का आनंद ले रहे थे और तुम्हें कष्ट दे रहे थे,
इसलिए तो तू मां भगवान का दूसरा रूप कहलाती है।
मां,तू ऐसा कैसे कर पाती है।
मां,तू ऐसा कैसे कर पाती है।।

****

पिता

जानवी
कक्षा - सातवी 'स'

मेरा साहस मेरी हिम्मत मेरी पहचान है
पिता दुनिया जिस पर गर्व करे ऐसा अभिमान है
पिता आसमान में जैसे तारा है
वैसे धरती का सितारा है
पिता चांद और तारों का जैसा रिश्ता वैसा एक फरिश्ता है
पिता जिसने पैरों पर चलना सिखाया
उससे भी ऊंचा देख सके इसलिए कंधों पर बिठाया।
अपने सपनों को छू सके इसलिए आसमानों में उड़ाया।
कभीकभी रो पड़े तो हंसना भी उसी ने सिखाया।-
मैना की मां की ममता होती है पर प्यार
उसका भी कम नहीं जिसने उंगली पकड़ चांद तारों पर बिठाया।
मेरा साहस मेरी हिम्मत मेरी पहचान है पिता।।

*****

वह अध्यापिका

कृष्णवेणी
कक्षा – सातवीं 'ब'

हमारी सबसे प्यारी गुरु,
हमको हर दिन पढ़ाती थी।
हम सब से मिलने के लिए,
हमसे पहले आ जाती थी।
वह हमको इतना प्यार देती थी,
हम सब की दोस्त बन जाती थी।
इतना स्नेह और प्रेम वह देती थी,
वह दूसरी मां कहलाती थी।
जिस दिन वह विद्यालय को न आती,
उस दिन इंतजार में खो जाते तब उसके।
देख कर उसके चेहरे को,
सबका चेहरा खिल जाता था।
जो पल बीते उनके साथ कभी न हम भूलेंगे।
छोड़ वह पल कैसे आगे जाएं यादों से न जाएंगे।

*****

दुख और किस्मत वाला लड़का

सैयद जाहिर हुसैन
कक्षा - सातवीं 'ब'

पात्र - रमेश, अंकल, आंटी(रमेश की चाची)

एक दिन की बात है एक गांव में एक लड़का रहता था।उसका नाम रमेश था और उसके पिता नहीं थे, मां ने उसका पालन पोषण किया और वह अब छह साल का था उसके कुछ दिन बाद उस लड़के की मां भी मर गई और वह अनाथ हो चुका था। एक दिन वह घर से बाहर सड़क पर जा रहा था कि तब उसे एक आवाज आई लॉटरी टिकट ले-लो, ले-लो, ले-लो भाई ....और उस समय उस लड़के के पास पैसे नहीं थे,इसलिए वह आसपास के लोगों से मदद मांगने की कोशिश कर रहा था

रमेश:-अंकल-अंकल रूपये हैं क्या?अंकल एक रुपए दे दीजिए।

अंकल:- मेरे पासएक रूपया भी नहीं है उस दुकान में एक आंटी है उसके पास जाकर देखो।

रमेश:-रमेश आंटी के पास जाकर देखता है।

(वह आंटी कोई दूसरी नहीं बल्कि रमेश की चाची है)

रमेश:- रमेश ने कहा कि चाची आप यहां कहां रहती हो।

चाची:- चाची ने कहा छोटू मैं यहीं पास की गली में रहती हूं।

रमेश:- चाची क्या आपके पास एक रुपया होगा?

चाची:- पैसा क्यों चाहिए?

रमेश:- लॉटरी टिकट लेना है।

चाची:- लो दो रूपए ले लो एकलॉटरी टिकट मेरे लिए भी लेकर आना।

(रमेश रूपए पाकर बहुत खुश हुआ सीधे दौड़ता हुआ लॉटरी वाले के पास आया.....)

रमेश:- लॉटरी वाले अंकल दो रुपए ले लो दो टिकट हमें भी दे दो।

(लॉटरी वाले ने दो रूपए लेकर दो टिकट उसे लड़के को दिए और वह भागता हुआ सीधे चाची के पास पहुंचा.....।

रमेश:- चाची लो आपनी एक टिकट।

चाची:- रमेश एक और टिकट कहां है?

रमेश:-चाचा दूसरी टिकट मेरे पास है,अब आप हमें अपने पास ही कुछ दिन के लिए रोक लो मुझे बहुत तेज की भूख लगी है।

चाची:-रमेश यह लो रुपए और बाहर कुछ लेकर खा लनहींरहे

रमेश:- चाची अब मेरे माता-पिता नहीं रहे इसलिए आप मेरा स्कूल में दाखिला करवा दीजिए।

चाची:- इतनी चिंता क्यों कर रहे हो मैं तुम्हारा दाखिला करवाऊंगी और स्कूल भी भेजूंगी।

रमेश:- ठीक है चाची।

(कुछ दिन के बाद स्कूल में दाखिला हो गया और फिर वह स्कूल जाने लगा वहां उसके बहुत सारे लड़के दोस्त बन ग .....कुछ दिन बाद उसे लड़के के चाचा आते हैं)

चाचा:- छोटे तुम यहां कैसे!

रमेश:- अपने चाचा को सारी समस्या सुनाता हैं।

(कुछ दिन तक रमेश अपने चाचा और चाची के साथ रहता है एक दिन उसके चाचा बीमार पड़ते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है। उसके दो दिन बाद उसके घर में अखबार आता है वह अखबार में देखता है कि उसकी लॉटरी टिकट दो करोड़ में खुली है ,यह देखकर वह बहुत खुश हुआ लेकिन दूसरे क्षण वह अपने मम्मी पापा और चाचा को याद करके दुखी भी हुआ.....।

*****

समय

साकेत
कक्षा - आठवीं 'ब'

रात जाती नहीं जल्दी,
सुबह आती नहीं जल्दी।
जीत से पहले होती है हार,
समय पर तो यह भी लेती है
मगर जब देती है जीत।
सफल बनने के लिए भी लगता है समय,
पर फिर दुनिया कहती है।
रात जाती नहीं जल्दी,
सुबह आती नहीं जल्दी।
समय तो हर काम में लगता है,
मगर हम ध्यान उसमें देते हैं,
जो दूसरा कोई कर रहा हो न कि जो हम कर रहे होते हैं।
रात जाती नहीं जल्दी,
सुबह आती नहीं जल्दी।।

*****

हिन्दी

अंजली
कक्षा – आठवीं 'ब'

हिंदी से बना हिंदुस्तान,
तभी तो भारत है महान।
हिंदी भाषा की उन्नति के लिए,
अपना सब कुछ कुर्बान है।
बिछड़ जाएंगे अपने हमसे,
अगर अंग्रेजी टिक जाएगी।
मिट जाएगा वजूद हमारा,
अगर हिंदी मिट जाएगी।
जब भी होता है यह दिल भावुक,
और यह जुबान पर खड़ाती है।

ऐसे समय में बस अपनी,
मातृभाषा ही काम आती है।
जनजन की भाषा है हिंदी-,
भारत की आशा है हिंदी।
जिसने पूरे देश को जोड़ा,
वह मजबूत धागा है हिंदी।।

*****

पहेलियां

ऐश्वर्या
कक्षा – छठी 'ब'

1. ऐसी कौन सी चीज है जिसे हम निगले तो जिंदा रह जाएं अगर वह हमें निकले तो हम मर जाएं बताओ क्या है?

उत्तर: पानी

2. वह कौन सी चीज है जो सिर्फ बोलने से टूट जाती है?

उत्तर: खामोशी

3. ऐसी कौन सी चीज है जिसे बहुत खराब माना जाता है? फिर भी उसे पीने के लिए कहा जाता है।

उत्तर: क्रोध

4. वह कौन है जो आपका माल भी रख लेता है और पैसे भी नहीं देता है?

उत्तर : नाई(बाल काटने वाला)

5. मेरे पास गला है सर नहीं बाजू है पर हाथ नहीं बताइए मैं कौन हूं?

उत्तर: कमीज

6. एक चीज का सस्ता रेट, लंबी गर्दन मोटा पेट पहले खुद का पेट भराए फिर सबकी प्यास बुझाए बताओ क्या है?

उत्तर: सुराहीपानी रखने का पात्)र(

7. पानी में पैदा होता है,पानी में मर जाता है भोजन से तो इसका गहरा नाता है बताओ क्या है?

उत्तर:नमक

*****

इन आंखों ने क्या न देखा.....

खुशबू
कक्षा – सातवी 'स'

हार से लेकर असफलता तक,
इन आंखों ने क्या न देखा,
बस उसे स्वीकारना न सीखा
गलत से लेकर सत्य तक
इन आंखों ने क्या न देखा
बस उसे रोकना न सीखा
भूल से लेकर चुप तक
इन आंखों ने क्या न देखा
बस इस समाज ने उस पर
हंसने की जगह उसे सुधारना न सीखा
गंदगी से लेकर अस्वच्छता तक
इन आंखों ने क्या न देखा
बस उसे साफ करना न सीखा।
आखिर इन आंखों ने क्या न देखा
बस यही काम करना न सीखा।
इन आंखों ने क्याक्या न देखा।-

*****

क्लास मॉनिटर

स्नेहा
कक्षा – नवीं 'अ'

जो क्लास में बने मॉनिटर कोरी शान दिखाते हैं।
आता जाता कुछ भी नहीं पर
हम पर रोब जमाते हैं।
जब क्लास में नहीं होते टीचर
तो खुद ही टीचर बन जाते हैं।
कॉपी पेंसिल लिए हाथ में
बस नाम लिखने लग जाते हैं।
खुद तो हमेशा बातें करते
केवल हमको ही चुप करवाते हैं।

अपनी तो सब गलती माफ
केवल मेरा ही नाम लिख टीचर से डांट खिलाते हैं।
क्लास तो संभाल पाते नहीं
बस केवल चीखते और चिल्लाते हैं।
ना माने अगर बच्चे इनकी बात
तो टीचर से कह आते हैं।
भगवान बचाए ऐसे मॉनिटर से
इन्हें नहीं हम झेल पाते हैं।।
*****

हमारा भारत

श्रेया
कक्षा - सातवी 'ब'

मेरा देश मेरी शान
इसके पास है सारा ज्ञान
वो सबके लिए है प्राण समान |
प्यारा प्यारा मेरा देश,
सबसे प्यारा मेरा देश |
दुनिया जिस पर गर्व करे,
ऐसा सितारा मेरा देश ||
मुकुट हिमालय इसका सुन्दर,
धोता इसके चरण समंदर |
गंगा-यमुना भरा भरा,
हरा-भरा मेरा देश ||
गंगा-यमुना की है धारा,
जिनसे है पवित्र जग सारा |
अन्न, फूल, जल है प्यारा,
इसलिए मेरा देश है सबसे प्यारा ||
भारत है इसका नाम,
और मेरे लिए प्राण समान |
भारत देश हमारा प्यारा,
यह है सबसे न्यारा ||
*****

हिन्दी

हर्षिता
कक्षा – सातवीं 'ब'

हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी
राष्ट्र भाषा हिन्दी हिन्दी
हिन्दी से सजती भारत की भाषाएं
सब मिलकर गाए भारत की गाथाएं
करते है तन-मन से वंदन
जन-गण-मन की अभिलाषा का
अभिनंदन अपनी संस्कृति का
आराधना अपनी भाषा का
हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी
राष्ट्र भाषा हिन्दी हिन्दी
बारी-बारी ऋतुए आती
अपनी घटा यहाँ दिखलाती
धरती अपनी हो, भारत अपना हो
कम लोग हो, पर अपने हो

*****

पिता

जान्हवी
कक्षा - सातवीं 'स'

मेरी साहास मेरी हिम्मत
मेरी पहचान है पिता |
दुनिया जिस पर गर्व करे
ऐसा अभिमान है पिता
आसमान से जैसे तारा
वैसे धरती का सितारा है पिता
चाँद और तारों के जैसा रिश्ता
वैसे एक फरिश्ता है पिता
जिसने पैरों पर चलना सिखाया
उससे भी ऊंचा देख सके
इसलिए कंधों पर बिठाया

अपने सपनों को छू सके
इसलिए आसमानों मे उड़ाया
और कभी-कभी रो पड़े
तो हँसना भी उसी ने सिखाया
माना की माँ की ममता होती है
माना की माँ की ममता होती है
पर प्यार उसका भी काम नहीं
जिसने उंगली पकड़ चाँद-तारों
में बिठाया

*****

वीर बाल दिवस

ऋषिका
कक्षा - नवीं 'स'

नन्हे वीरों ही गाथा, सबको सुनानी है,
वीर बाल दिवस पर, हर दिल में ये उमंग होनी है |
गुरु गोविंद सिंह के शिष्य ,जिन्होंने कर्तव्य निभाया ,
अपने बलिदान से, देश को सजाया |
छोटे थे वे कदमों से, पर थे दिल से बड़े,
कभी न डिंगे, कभी न थमे, संघर्ष में सदैव खड़े |
सच की राह पर चलकर, सच की रक्षा की,
बालकों ने दिखाया, कैसे वीरता का मतलब है
लहराए थे जब हाथों में, खंजर और तलवार,
दमन से लड़ते हुए, हुए साहसिक रुखसार |
वीर बालकों की ताकत, दुनिया ने पहचानी,
उनकी शौर्य गाथाओं से, रोशन हो दुनिया की जवानी |
वीर बाल दिवस पर हम सब यह संकल्प लें,
इन नन्हें नायकों को दिल से श्रद्धांजलि दें |
उनकी वीरता से सीखें साहस और समर्पण,
हर बालक में छुपा है एक वीर आत्मा का रूप |
'वीर बाल दिवस हमें साहिबजादों की तरह साहस और निडरता से अपने धर्म की रक्षा करने का संदेश देता है|'

*****

मेरा देश

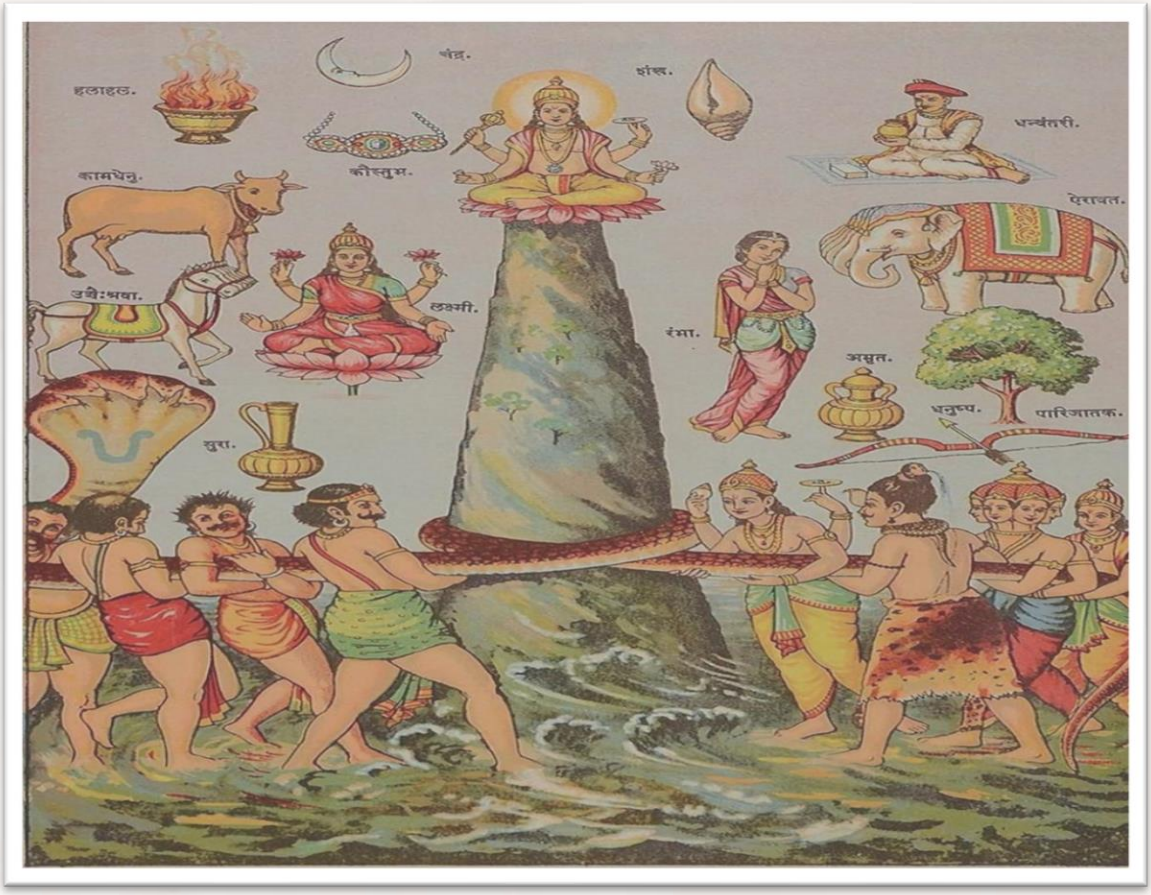
शांभवी
कक्षा – नवीं 'स'

जब आए थे इस धरती पर गोरे आपस में हमें लड़ाने को,
गुलाम हमको बना दिया भारत में अपना वर्चस्व बढ़ाने को |
गौ माता की चर्बी लेकर अंग्रेजों ने हथियार बनाया था,
बैरकपुर के मंगल पांडे ने आजादी का शंख बजाय था |
जब अंग्रेजों नें हमारी सत्ता को हड़पने की नीति बनाई थी,
तो चढ़ रही उन गोरों के ऊपर वो रानी लक्ष्मीबाई थी |
हिंसा को उकसाने हमको गोरों ने अपना ठाठ बनाया था,
बैरिस्टर बनके लौटे गांधी ने सत्याग्रह का पाठ पढ़ाया था |
मैनपुरी के षड्यन्त्र से अंग्रेजों ने अपने शासन का काम किया,
तब प्रसाद अशफ़ाक लाहिड़ी ने काकोरी को अंजाम दिया |
सेंट्रल असेंबली बम से उड़ाकर जब पूरा भारत झूमा था,
भगत सुखदेव और राजगुरु ने तब फांसी का फंदा चूमा था |
क्रूरता और अत्याचार से गोरे के, जब भारतवासी बर्बाद हुए,
तब इस भारत माँ की रक्षा को पैदा चंद्रशेखर आज़ाद हुए |
इस मिट्टी के सीने पर चढ़कर अंग्रेजों ने इसका जो दमन किया,
तब नेताजी सुभाष चंद्र बोस नें आज़ाद हिन्द का गठन किया |
सारी बिखरी पड़ी रियासतों को एक रियासत बना दिया,
सरदार पटेल की मेहनत ने एक अखंड भारत बना दिया |

*****

कुम्भ मेला

कुम्भ मेला भारत में आयोजित होने वाला एक विशाल मेला है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु हर बारहवें वर्ष प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में से किसी एक स्थान पर एकत्र होते हैं और नदी में पवित्र स्नान करते हैं। प्रत्येक १२वें वर्ष के अतिरिक्त प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के बीच छह वर्ष के अन्तराल में अर्धकुम्भ भी होता है; २०१३ के कुंभ के बाद २०१९ में प्रयाग में अर्धकुम्भ मेले का आयोजन हुआ था और अब 2025 में पुनः कुंभ मेले का आयोजन हो रहा है |
पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुम्भ राशि मे प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है |



*****

पौराणिक कथाएं

अर्जुन कुमार
कक्षा - आठवीं 'ब'

कुम्भ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मन्थन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर सम्पूर्ण देवता दैत्यों के साथ सन्धि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयन्त अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया |

उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयन्त का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयन्त को पकड़ा। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा।

इस परस्पर मारकाट के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। उस समय चन्द्रमा ने घट से प्रस्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शान्त करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अन्त किया गया। अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरन्तर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं।

*****

सूरज निकला मिटा अंधेरा

श्रावणी
कक्षा – छठी 'अ'

सूरज निकला मिटा अंधेरा,
देखो बच्चों हुआ सवेरा |
आया मीठा हवा का फेरा,
चिड़ियों ने फिर छोड़ा बसेरा |
जागो बच्चों अब मत सोओ,
इतना सुन्दर समय न खोओ |
अब, जाओ स्कूल वरना होगी देर,
आज का दिन होगा अच्छा |
खेलेगा तुम्हारे साथ हर बच्चा |
पढ़ाई करो, मस्ती करो,
लेकिन शैतानी मत करो |
फिर आओ घर खेलने जाओ,
क्योंकि हर रोज यही है करना।

*****

मेरे गुरुजन

हर्षदा गुरुस्थले
कक्षा - छठी 'अ'

जयश्री मैडम पढ़ाती हैं गणित |
उनकी पहचान है गणित
मेरी एक ज़िंदगी है गणित ,
ज़िंदगी का एक सार है गणित |

प्रतिमा मैडम पढ़ाती हैं हिन्दी शान है हिन्दी |
निराला, प्रेमचंद की लेखनी का गान है हिन्दी |
बच्चन, पंत, दिनकर का मधुर संगीत है हिन्दी |
तुलसी सूर मीरा जायसी की तान है हिन्दी |

गणपति सर पढ़ाते हैं विज्ञान, उनके ज्ञान में है विज्ञान |
समाज और मनुष्य के बीच अंतःक्रिया है विज्ञान |
एक सौ अठारह मूल तत्वों की पहचान है विज्ञान |

गिरीश गुरुजी जो पढ़ाते हैं वह है संस्कृत |
शुष्क हृदय को जो भावों से भर दे वह है संस्कृत |
हिन्दी का जो संवर्धन कर दे वह है संस्कृत,
गुरु की गरिमा का जो गुणगान सिखा दे वह है संस्कृत |

अंबिका मैडम पढ़ाती हैं न्यारी, अंग्रेजी प्राण से प्यारी |
चले गए अंग्रेज छोड़ि नहीं हमने है मस्तक पे धारी |

उच्च नौकरी की ये कुंजी अफसर यही बनावन हारी |
सबसे मीठी यही लागत है, भाषाएं बाकी सब खारी |

अरुंधती मैडम है सुपर से ऊपर,
विषय है उनका कंप्युटर |
घर बिजनेस स्कूल और दफ्तर
काम चले न बिना कंप्युटर |

*****

संस्कृत अनुभाग

एकता

शाम्भवी

कक्ष्या - नवमी 'अ'

मतभेदस्य विरोधस्य वा अभावः एकता इति उच्यते । एकतायाः अपरं नाम "एक्यं सङ्घटनं" वा इत्यपि वर्तते । मनुष्याणां सांसारिकजीवनस्य कृते एकता महान् लाभकारी गुणः अस्ति । यदि

संसारे मनुष्येषु एकता न स्यात् तर्हि तेषाम् एकदिनस्यापि जीवनं कठिनं सम्पद्येत । एकतायां महती शक्तिः भवति । यत् कार्यम् एकेन कर्तुं न शक्यते तद् बहूनां सम्मिलितेन समुदायेन सुगमतया एव भवति । तद्विषये एका कथा वर्तते –

एकस्मिन् ग्रामे एकः कृषिकः तस्य च द्वौ पुत्रौ आस्ताम् । एकदा पुत्रयोः मध्ये कोलाहलः सञ्जातः । तदा पिता चिन्तितवान् यत् एतयोः एकता कथमपि संरक्षणीया इति । तदा सः एकम् उपायं कृतवान् । सः कृषिकः पुत्रयोः समीपं गत्वा तेभ्यः एकम् एकम् काष्ठदण्डं दत्तवान् । तौ काष्ठदण्डौ हस्तेन गृहीत्वा छेदनं कर्तुम् उक्तवान् । बहु सुलभेन उभौ अपि पुत्रौ तस्य काष्ठदण्डस्य छेदनम् अकुरुताम् । ततः परं पिता एकं काष्ठदण्डानां समूहमेव आनीय छेत्तुम् उक्तवान् यस्मिन् दशाधिकाः काष्ठदण्डाः तन्तुना बद्धाः आसन् । आदौ एकः पुत्रः प्रयत्नम् अकरोत् । सः किमपि कर्तुं न शक्तवान्। पुनः द्वितीयः पुत्रोऽपि बहु प्रयत्नं कृतवान् । तेनापि तस्य छेदनं न जातम् । तदा पिता उपदिष्टवान् यत् वयम् एवं एकतया भवामः चेत् अस्मान् कोऽपि किमपि कर्तुं न शक्नोति । यदि वयमेव एवं परस्परं कलहं कुर्वन्तः भवामः तदा स्वयमेव नष्टमनुभवामः इति ।

वर्तमानसमये एकतायाः महान् अभावः दृश्यते । परिवारे समाजे देशे तथा सम्पूर्णे संसारे सर्वत्र अनेकतायाः मतभेदस्य च भयङ्करः झञ्झावातः प्रवाहमानः दृश्यते । एतस्य प्रधानं कारणं तु स्वार्थपरता एव अस्ति । सर्वे स्वकीयमेव हितं पश्यन्तः सन्ति न तु अन्येषाम् । अतः एकतायाः स्थापनाय परस्परं स्नेह-सौहार्दवर्धनाय स्वार्थसाधनेन सह परेषामपि हितं चिन्तनीयम् इति अस्य तात्पर्यम् ।

*****

गर्वभञ्जनम्

आत्मारूढः

कक्ष्या - नवमी 'ब'

"विलियम जेम्स" कश्चन आङ्ग्लपर्यटकः । सः विभिन्नदेशेषु अटित्वा तस्य तस्य देश्यस्य वैशिष्ट्यं तथा धर्मस्थलानां, तीर्थस्थलानां च दर्शनं करोति । एकदा सः भारतं प्रति आगतवान् आसीत्। तदवसरे सः सुप्रसिद्धपुरीजगन्नाथमन्दिरस्य दर्शनार्थं पुरीम् अगच्छत् । तदा तेन दृष्टं यत् तत्र आगताः भक्ताः भगवति विभिन्ननैवेद्यानि अर्पयन्ति , यथा फलवस्त्रादीनि । तदा तेन चिन्तितं यत् मयापि किमपि अत्र अर्पणीयम् इति । परन्तु किं दातव्यम् ? एते तु निर्धनाः यत्किञ्चित् ददति । मया किमपि विशिष्टं दातव्यम् इति मत्वा सः तत्रत्यं मुख्यपूजकम् अपृच्छत् यत् भगवते मया किं दातव्यम् इति । तदा पूजकस्य मनसि अपि किमपि एतस्मिन् विषये अस्फुरत् । अतः सः श्वः वदिष्यामि इयि उक्तवान्।

तस्मिन् रात्रौ सः पूजकः कश्चन स्वप्नम् अपश्यत् यत् भगवान् जगन्नाथः तस्मात् अङ्ग्लपर्यटकात् एकं ताम्बूलम् इच्छति इति । तस्मिन् ताम्बूले हस्तिनः मणिना निर्मितं सुधाचूर्णं लेपनीयम् इति ।

प्रातः सः पूजकः झटिति स्वीयस्वप्नविषये आङ्ग्लपर्यटकम् उक्तवान् । तदा पर्यटकः सम्भ्रान्तः जातः । हस्तिनः मणिः कुतः आनेतव्यः इति । यद्यपि हस्तिनं क्रेतुं मम सामर्थ्यम् अस्ति परन्तु सर्वेषु हस्तिषु मणिः न लभ्यते । शतेषु सहस्रेषु वा एकः मणिः लभ्येत । परन्तु मया कति वा हस्तीनि क्रेतुं शक्यन्ते । भगवान् तु एकं लघुताम्बूलमेव इच्छति परन्तु अहं तदपि दातुम् अयोग्यः असमर्थश्च अस्मि इति तस्मै बोधनं जातम् । बहु धनमस्ति इत्यतः बहु विशिष्टं किमपि दास्यामि इति चिन्तितोऽहम् एकं ताम्बूलमपि दातुं मम सामर्थ्यं नास्ति इति सः ज्ञातवान् । मम सविधे विद्यमानस्य धनस्य विषये मम यः गर्वः आसीत् तस्य कथं भगवता भञ्जनं कृतम् इति तेन अवगतम् । सर्वम् अवगते सति तस्य नेत्राभ्याम् अश्रूणि न्यपतन् ।

*****

लक्ष्यनिर्धारणम्

अमूल्या
कक्ष्या - नवमी 'स'

समाजेऽस्मिन् जनानां जीवनक्रमः अद्यत्वे लक्ष्यहीनमेव दृश्यते । श्रेष्ठजनान् दृष्ट्वा तेषां मनसि अपि उत्तमफलेच्छा जायते । ते कदाचित् एकस्मिन् मार्गे गन्तुमिच्छन्ति कदाचित् अन्यस्मिन् मार्गे । ते स्थिराः न भवन्ति यतो हि योजनायाः चिन्तनस्य मननस्य च अभावः । ते अन्येषां जीवनक्रमं दृष्ट्वा तादृशाः एव भवितुम् इच्छन्ति । किन्तु अन्ते लक्ष्यं निर्धारयितुं न शक्नुवन्ति । परिणामस्वरूपं सः एकस्यां दिशि स्वक्षमतानां नियोजनं कर्तुं न शक्नोति । मतेः भिन्नतायाः कारणात् तस्य प्रयोजनं लक्ष्यप्राप्तिर्वा न भवति । एतस्मात् कारणात् सः सर्वदा असफलतामेव प्राप्नोति ।

सफलतायाः अपरस्मिन् सूत्रे विद्यते अभिरुचेः जागरणम् । सः लक्ष्यस्य चयनं कृतवान् । तं प्रति उत्साहः श्रद्धा अपि आवश्यकी वर्तते । लक्ष्यं प्रति यदि उत्साहः श्रद्धा च न भवति तस्मिन् कार्ये सफलता अपि न लभ्यते । सा सफलता सर्वदा सन्दिग्धरूपेणैव तिष्ठति । यतो हो पूर्णमनोयोगेन उत्साहेन च विना लक्ष्यप्राप्तेः आशा कर्तुं न शक्यते । मनोविज्ञानस्य एकः सिद्धान्तः वर्तते यत् उत्साहः मनोयोगश्च सफलतायाः मुख्यस्रोतः वर्तते । एतौ विना कार्यस्य सफलता न विन्दते ।

उत्साहः कस्यापि कार्यस्य प्राणस्वरूपः वर्तते । जनः यस्य लक्ष्यस्य निर्धारणं करोति तस्य लक्ष्यस्य नियोजनं सः पूर्णमनोयोगेन कुर्यात् । यतो हि कार्यस्यारम्भे यथा श्रद्धा उत्साहः च दृश्यते तथा अन्ते न भवति । तस्मात् जनः अन्ते सफलतां न प्राप्नोति । यथा उक्तं नीतिकारेण –

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

अतः लक्ष्यप्राप्तेः कारणं भवति दैनिकव्यवहारः । लोकाचारः अपि आवश्यकः । दोषाः तु सर्वत्र भवन्त्येव । परन्तु तं दोषं समीचीनं कृत्वा तस्यानुभवेन अग्रे गच्छामः चेत् यशः अवश्यम् अस्माकं हस्ते भवति ।

*****

विद्यार्थिजीवनम्

मानसी कणजीकर
कक्ष्या - नवमी 'अ'

किं नाम विद्यार्थिजीवनम् ?

अस्माकं संस्कृतौ भारतवर्षे मानवजीवनं चतुर्धा विभज्यते ब्रह्मचर्य , गृहस्थ , वानप्रस्थ , सन्यासश्चेति । पञ्चमवर्षादरभ्य पञ्चविंशतेः वर्षपर्यन्तं ब्रह्मचर्यकालः भवति । एषः एव समयः अध्ययनस्य भवति । अस्मिन् काले छात्रेण यावान् परिश्रमः क्रियते अग्रिमजीवने तेन तावत् सुखं प्राप्यते ।

अतः विद्यार्थिजीवनस्य मुख्यम् उद्देश्यं विद्याध्ययनमेव । छात्रेण आत्मनः स्वास्थ्यमपि रक्षणीयम्। यदि विद्यार्थिजीवनं विकृतं भवति तर्हि जीवने महान् क्लेशः भवति । यः छात्रः चरित्रनिर्माणाध्ययनम् उत्तमस्वास्थ्यञ्च मनसि निधाय जीवनकक्ष्यं स्वीकरोति स एव जीवने साफल्यं प्राप्नोति ।

विद्यार्थिजीवनस्य आवश्यकगुणाः

'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः'। अतः विद्यार्थिजीवने आलस्यं न करणीयम् । विद्यार्थिनः जीवनलक्ष्यं प्रति संलग्नाः भवेयुः । प्रातःकाले शीघ्रम् उत्थाय अध्ययनं करणीयम् । तदा मनः श्रान्तः न भवति इति कारणेन यदधीतं तत् चिरं तिष्ठति । परीक्षासमये छात्रौः महान् परिश्रमः क्रियते, तत्तु न योग्यमस्ति । अद्यतनच्छात्राः एव भाविनागरिकाः । छात्रः एव भाविनः समाजस्य निर्मातारः भवन्ति । तथा च विद्यार्थिजीवनस्य सफलतायामेव समाजस्य विकासोऽवस्थितः । विद्यार्थिनः सुखमाश्रित्य जीवनं न यापयेयुः । तद्विषये सुभाषितमेव वर्तते यत् –

सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।
सुखार्थी चेत् त्यजेत् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम् ॥ इति ।

अर्थात् सुखार्थी एव वयं भवामः चेत् अस्माकं कृते विद्या कदापि नागच्छति । केवलं सुखमेव नाश्रित्य अध्ययनं कुर्मः चेत् अग्रिमजीवने सुखं प्राप्तुं शक्नुमः ।

*****

स्त्रीशिक्षायाः महत्त्वम्

सन्निधि कुलकर्णी
कक्ष्या - नवमी 'स'

प्राचीनकालेऽपि स्त्रियः शिक्षां प्राप्नुवन्ति स्म । ताः स्वस्याः वैदुष्येण संस्कृत्या च बहु प्रसिद्धिं यशश्च प्राप्नुवन्ति स्म । परन्तु गच्छता समयेन समाजे पुरुषवादिमानसिकताया स्ववर्चस्वात् स्त्रीणामुपरि कठोराघातः जातः।

विगतवर्षेषु समाजे एकं चिन्तनम् उद्भूतमस्ति । वैचारिकस्वतन्त्रतायाः कारणात् सामाजिकपुरुषवादिचिन्तनस्य निर्मूलनं सञ्जातम् । एवञ्च इदानीं जनाः स्त्रीशिक्षायाः महत्त्वमपि अवगतवन्तः । यद्यपि अधुनापि केचन जनाः सन्ति ते मन्यन्ते यत् स्त्रीणां कार्यक्षेत्रं गृहस्य अन्तः एव भवितव्यम् । एवञ्च स्त्रीणां शिक्षणेन अधिकाः हानयः भवन्ति । तथापि एतानि नकारात्मकचिन्तनानि पृथक्कृत्वा स्त्रीशिक्षायाः मूल्यं प्रतिदिनं वर्धते । सहशिक्षया साकं सम्पूर्णदेशे बालिकानां शिक्षायै सहस्राधिकाः पृथक्-विद्यालयाः तथा महाविद्यालयाः अपि उद्घाटिताः सन्ति, यत्र सहस्राधिकाः बालिकाः पठन्ति ।

अतः कथ्यते यत् एकस्य पुरुषस्य पठनेन एकैकः मानवः शिक्षितः भवति, यदि एका स्त्री शिक्षां प्राप्नोति तर्हि सम्पूर्णपरिवारः शिक्षितः भवति । स्त्री परिवारस्य आधारः वर्तते । सा माता भवति। सा एका शिक्षिता सती स्वस्य बालेषु शिक्षा तथा संस्कारं तु ददाति एव, तेषां स्वास्थ्यस्योपरि अपरिमितं ध्यानं ददाति । शिक्षिता स्त्री गृह-परिवारस्य प्रबन्धनम् अत्यधिकं कुशलतापूर्वकं कर्तुं शक्नोति, धनोपार्जनं तथा अन्येषु कार्येषु पत्युः सहयोगम् आचरति । सा स्वस्य अधिकारान् दायित्त्वानि च सुष्ठुरूपेणावगच्छति तथा समाजे प्रसारितानां कतिपयदुष्प्रवृत्तीनां विरोधं प्रकटयितुं पुरतः आगन्तुं च शक्नोति । अधुना कश्चन प्रश्नः उद्भवति यत् तासां कृते सहशिक्षायाः वातावरणं समीचीनं भवति उत भिन्नशिक्षायाः । अनेके अभिभावकाः सहशिक्षायाः विरोधं कुर्वन्ति । ते वदन्ति यत् बालिकाना बालकैः साकं मिलित्वा पठनं सम्यक् नास्ति । ताः स्वस्थाने सम्यक् भवितुं शक्नुवन्ति, किन्तु अधुना सः समयः न, यत् यदा बालिकाभिः गृहस्य अन्तः एव स्थातव्यम् । अधुना ताभिः किमपि कार्यार्थं तु बहिः आगन्तव्यमेव । एवं रीत्या बालकैः साकं मेलनं तु कुत्रापि भवितुं शक्नोति ।

यथा बालकानां तथैव बालिकानां कृते अपि सर्वाः शिक्षाः प्रदेयाः । समाजः स्त्रीपुरुषयोः मिलित्वा निर्मितः भवति । यावत् पर्यन्तं तयोः समानशिक्षायाः अवसरः न दीयते तावत्पर्यन्तं समाजे सन्तुलनं स्थिरं न स्थास्यति, एवञ्च सम्यक्तया विकासोऽपि न भवितुं शक्यते । द्वयोः पक्षयोः दार्ढ्यमेव समाजे वास्तविकं दार्ढ्यमानेतुं शक्नोतीति ।

English Department

Teachers Contribution

COLOSSAL GULF !

Ms. Shivani Doonga, PRT

The window of my room once witnessed hard working, indefatigable and impoverished men, utilizing all their strength and brawn to ensure their subsistence and to feed their family. They all carried muscularity, shredded body, lowest fat percentage due to continual Labour work round the clock. They were dismantling a strongly built home using mallets and hammers in the scorching heat of the sun. I believe that they didn't even have breakfast coz they started their work early. It was in the month of May, when vehemence of summer smacks your face even for standing outside for a few milliseconds.

And, Here I am, at the other side of the window, after having a full course meal equivalent to Michelin star in the morning. At the antithesis – Installing an exercising machine on the same wall with that window, drilling holes in the saccharine breeze of Air conditioner, just to achieve that shredded physique.

Life is difficult, depressing and at times challenging as well as surprising. We all should cherish and be grateful for whatever we have.

*****

ALL ABOUT ME

Mrs. Rina Bardhan, PRT

Many times my life isn't always easy, But still I love living it anyway,
I have a family who are always there for me.

I have friends to talk and make fun with.
They lift me up when I am down.
All are fine with me, is not a myth.
Till I sometimes break down.
Mary
I have a house, where I feel safe and secure,

known as my home.
A shelter for me to endure Its of course my personal dome.
I have strength and courage too
I am loving and loyal
Whatever may happen, I will get through.
I will enjoy my life fully.
I have many things around me.
They make me smile and laugh.
Though my life is not perfect but still I am contented.
Things I have are more than enough.

*****

Mental Health and its Significance in Education

Bal Krishan Tiwari, PGT (Biology)

Mental health in our world has a wide variety of dimensions. It is not just the diagnosis of a mental disorder but rather a life in which an individual recognizes their maximum capabilities, deal with everyday challenges and stressors, is able to work and is socially responsive. There is the keen sense that teaching, learning cannot be sustained without a good state of mental health.

There is this Discourse in Indian pious literature that I consider deep, wise and literate adages about mental health.

The Bhagavad Gita teaches us that we should strive for Samatvam and balance when confronted with difficult situations. It suggests that one should act without being concerned about the results of his/her activities, while performing his/her responsibilities.

The UPANISHADS also make clear that if people become self-aware (Atmgyanam) understands their actual identity which gives them inner peace, there is an end to their mental suffering.

According to Buddhist teachings, one becomes more present-focused with belief of being aware. This being aware means understanding what is being performed without forming opinions regarding it. This is said to reduce anxiety levels, concentration focuses and emotional stability is acquired.

Now the question is how we should apply the above information and learn the importance of mental health in our classroom??

Ideally, a classroom should be a sanctuary for the mind; a place where curious thoughts are nurtured and knowledge can grow. But this can only happen when both students and teachers have good mental health.

For Teachers: Mental health empowers educators to create an inclusive and supportive learning environment. It allows them to connect authentically, Building genuine rapport with the students, fostering trust and understanding, maintaining emotional resilience, gracefully and calmly navigating through the profession's challenges. Inspire creativity, using innovative, creative, and fun teaching practices to foster a love for learning.

For Students: A healthy mind is vital for learning and understanding. It helps students to concentrate better, It enables them to learn and grasp things better, work on more complex issues, Managing stress, Who isn't stressed in today's world? Learning how to cope with academic pressures and exam anxieties. Building self-esteem like I am unique and deserving Developing a positive self-image and learning how to build it up. A good dose of self-love is important.

Conclusion:
In an increasingly complex and demanding world, prioritizing mental health is not merely an option, but a necessity. By cultivating a culture of mental well-being in our classrooms and workplace, we can unlock human potential, foster innovation, and create a more compassionate and fulfilling society. As the Bhagavad Gita reminds us, "The mind is restless, turbulent, obstinate, and very difficult to subdue, as the wind." However, through consistent effort, self-awareness, and a commitment to well-being, we can harness the power of the mind and achieve true fulfillment.

Students' Contribution

Lord Basavanna

Pranav
Class 6B

Lord Basavanna, a great social reformer, poet, and politician, is known for his belief that "Work is Worship." He established the Anubhava Mantapa,

often considered the first parliament of the world, where thinkers and scholars gathered to discuss social, spiritual, and moral values.
Basavanna wrote many Vachanas (poems) that conveyed profound wisdom and
promoted equality. He is regarded as a cultural icon of Karnataka for his revolutionary ideas. Through his efforts, he formed a strong community and laid the foundation for a new religion called Lingayatism, which emphasizes devotion to Lord Shiva and rejects caste-based discrimination.

*****

Water, a mystery

Saksham Kumar Varma
Class 7C

The water gets disappear
When I kept it free,
Was he hiding or
I was unable to see.

Water is a mystery to me
Is it liquid
A solid,
Or a gas,
Or is it all of the there.

I always think it is playing with me
Or want to be invisible,
So that no one can see.

Even if I get explained
Or I see,
I think it still would be a
Mystery to me.

*****

Rise Beyond

Janavi
Class 7C

When the shadows stretch and darkness calls,
And you find yourself against life's walls,
Remember this: you hold the key,

To break the chains and set dreams free.
The road is steep, the path unsure,
But strength is born in trials you endure.
Each stumble, each fall, is a lesson in disguise,
A chance to grow, to reach new skies.
Doubt may whisper, fear may roar,
But within your soul lies something more.
A spark, a flame, a burning fire,
To lift you up, to take you higher.
So stand up tall, face the test,
Give the world your very best.
For every step, no matter how small,
Brings you closer to conquering it all.
Dreams aren't distant; they're in your sight,
Chase them boldly, with all your might.
The journey's hard, but you'll soon see,
You were always destined to be free.--

*****

Canvas of Dreams

Vaishnavi

Class 11

In the quiet corners of my restless mind,
Lie dreams as vast as the skies, unconfined.
A melody hums, soft yet bold,
A story untold, a world to unfold.

Books and whispers of ancient lore,
Teach me lessons, but I crave more.
In every atom, in every hue,
Life paints a picture, ever new.

The stars above, in their tranquil dance,
Speak of mysteries, of every chance.
To explore, to question, to endlessly learn,
To seek the light, wherever it burns.

The breeze carries tales from lands afar,
A hint of magic, a shooting star.
Each dawn arrives with a radiant fire,
Filling my soul with boundless desire.

For every failure, a stronger climb,
For every setback, a perfect rhyme.
Through storms and trials, I'll pave my way,
Chasing my dreams, come what may.

The rivers meander, the mountains stand,
Each whispering secrets of a mystical land.
Nature's wonders, so vast, so deep,
Guarding treasures where dreams can leap.

Every sunset tells a fleeting tale,
Of fleeting moments, of winds that sail.
Every raindrop sings a soothing hymn,
Washing the fears that shadow the brim.

Oh, life! You're a puzzle, a riddle divine,
Each piece a treasure, a moment to shine.
I vow to embrace your infinite streams,
For you are the canvas of my dreams.

Beyond the horizon, where silence sways,
Lie endless paths, untraveled ways.
The universe whispers, "You're meant to soar,
Unfold your wings and explore much more."

So here I stand, with hope as my guide,
A fire within and stars by my side.
The journey begins, no matter how far,
With every heartbeat, I chase my star.

*****

TIPS TO FOCUS IN STUDIES

Mahesh
Class 8A

Past is waste paper, present is a newspaper, future is a question paper, so ready and write carefully otherwise your life will be a tissue paper.

1. Make study enjoyable.
2. Study topics with moderate difficulty.
3. Study in short period.
4. Avoid distractions at all cost .
5. Maintain a healthy lifestyle.
6. Hunger for study.

You have power over your mind not outside events,realise this and you will find strength.

WANTS SOME MOTIVATION

1. "Stop telling people more than they need to know ".
2. "Don't trust what people say, watch what they do".
3. "Lear to control your mouth, mind and money".
4. "Life is better when nobody knows anything about you".
5. "Only compare yourself to your previous self ".
6. " Just live a life without thinking about other's feeling about you".

*****

Whispers of the Sea

Deepak
Class 8B

The waves, they sing, a song so untold,
Of hidden depths and treasures untold.

The moonlight dances on wide waters,
Guiding the tides with a gentle stride.

Whispers rise from the ocean's heart,
A tale of life, a work of art.

Forever it moves, wild and free,
The eternal spirit of the sea.

The ocean's waves, they rise and fall,
A rhythmic dance, a timeless call!
Meaning:
It reflects the timeless and mystical nature of the ocean.

*****

Inspiring Thoughts

Composed by_Mr.Rabindranath Tagore
Compiled by **Deependra Choudhary**
Class 7

- "Faith is the bird that feels the light and sings when the dawn is still dark."
- "That side of our existence whose direction is towards the infinite that seeks not wealth, but freedom and joy."
- "Death is not extinguishing the light; it is only putting out the lamp because the dawn has come."
- "Gray hairs are signs of wisdom if you hold your tongue, speak and they are but hairs, as in the young."
- "I slept and dreamt that life was a joy. I awoke and saw that life was service. I acted and behold, service was a joy."
- "Nirvana is not the blowing out of the candle. It is the extinguishing of the flame because day is come."
- "We read the world wrong and say that it deceives us."
- "The highest education is that which does not merely give us information but that makes our life in harmony with all existence."
- "The small wisdom is like water in a glass: clear, transparent, pure. The great wisdom is like the water in the sea: dark, mysterious, impenetrable."
- "If you cry because the sun has gone out of your life, your tears will prevent you from seeing the stars."

*****

MY TEACHER

Tejaswini M Battur
Class 2A

WHAT I AM TODAY BECAUSE OF U ONLY,
NO WORDS MATCH FOR YOU, BUT U ARE **MY BEST**,
ONCE U TAKE CARE AS **MOTHER**,
ONCE U GUIDE AS **FATHER**,
ONCE U PLAY WITH AS MY **FRIEND**,
ONCE U INSPIRED LIKE AS **MOTIVATOR**,
AND ALWAYS BLESS LIKE **GOD**,
YOU ARE SO **WONDER** FOR ME AND YOU ONLY,
YOU HAVE MANY **ROLES** IN MY LIFE,
SO YOU ARE GREAT BECAUSE YOU ARE **MY TEACHER**.

*****

A TEACHER

Ananya M Battur
Class 5A

BEHIND THAT KING, IT IS YOU, A TEACHER.....
BEHIND THAT VOLUNTEER, IT IS YOU, A TEACHER.....
BEHIND THAT ACTOR, IT IS YOU, A TEACHER.....
BEHIND THAT FOREST OFFICER, IT IS YOU, A TEACHER.....
BEHIND THAT SINGER , IT IS YOU, A TEACHER .. ..
BEHIND THAT BEST PERSON , IT IS YOU, A TEACHER. .....
BEHIND THAT INSPECTOR, IT IS YOU, A TEACHER.....
BEHIND THAT DOCTOR, IT IS YOU, A TEACHER .....
BEHIND THAT ASTROLOGER, IT IS YOU, A TEACHER.
BEHIND THAT RANKER, IT IS YOU , A TEACHER .....

*****

Don't Give up

Saiprasad Govind Jeje
Class 5A

→ A long time ago, there was lived a boy named Rodney in a village. He was very happy with his family. But his happiness could not last for long

Rodney and his fellow villager faced a Severe drought. The desperately waited for rain but with no luck. All the crops, land and even tree dried up, The cattle started drying. As there was no rain, the stream was drying up slowly.

One night during a meet with the villagers Rodney said " Friends, we call have heard tales from our grandparents about an underground river flowing through our village. Why don't we dig and see? The villager agree and started digging. They dug for some day but gave up soon.

However Rodney kept on digging. When people told him give up. He said God is helping and guiding my away one day when he had dug deep enough, Rodney saw water His attitude of not giving up saved the whole village.

Never give up so easily, Rodney advised all the villagers. Now they are never short of water. And whenever any problems arise, all the villagers cam and together and find a Solution.

*****

A Great teacher

Nameer zainab

Class 5A

Nature is like mother .It is essential for us because it provides all the basic needs of life. Nature is also a grate great teacher. We can learn bloom many lessons from her the flower blooms only for a day it keeps smiling a lesson for us if we should live our life our to the fullest, how short it may be. Water is soft but it flows rocks, the rocks. Over hard give in. In the our problems may be difficult same way but if we persist, they too give in. tiny ants organise themselves and They teach us task carry away heavy insects. They teach us that we can do impossible through teamwork. Similarly in bare tree in winter come back to its green majesty once again In spring. We can learn from it that the difficult time will never remain with us forever Thus, nature is the greatest gift of God to mankind. Every object of nature teaches u something about life.

*****

Puzzle

Arnav Bhardwaj
Class 5A

1. I'm tall when I'm young, and I'm short when I'm old. What am

Ans A Candle.

2. What is full of holes but still holds

Water? Ans A sponge.

3. What is always front of you be seen? But can

Ans The future

4. What goes up but never comes down ?

Ans Your age

*****

MY SCHOOL

Vishwadeep
Class 3A

My school my school Beautiful and so cool

Our teachers are so nice They give us knowledge and advice. My school looks so simple But to us it is a temple.

In the morning we pray Study there whole long day When the life of school ends, We have a bunch of my friends.

I will only be If I miss my school a bag

I go with a bag with my school tag.

We laugh in the school Follow discipline and the rule.

My school my school Beautiful and so cool

*****

Child Labour

Pratiksha metre
Class 3A

Child labour is a very serious issue. Child labour is a social evil. One should always try to stop child labour. We can see child labour in our day to day life, In shops, in garages, super markets etc. Child labour is a crime. Child labour destroys the future of the child, To stop child labour government

has taken many steps. Such as free education to children of age group 6 to 14 Mid day meal scheme, Survashiksha abhiyan,Sab Pade Sab Bade, etc.

*****

TREE

Shaik Ruman

Class 3C

Do not cut me, cried the tree. Because I give you rain free.
In my cool shade you rest, Eat my funits that are best.
Take in my fresh Smell. Me let Live my life well.

*****

RIDDLES

Parikshita

Class 5C

1.What begins with T, ends with T, and has T in it? A Teapot
2.I have branches, but trunk no fruit or leaves. What am I? bank
3.What has to be broken before you can use it? An egg
4.I make two people out of one. WHAT AM I ? Mirror

*****

Washing Day Washing Day

Divyanshi

Class 4B

Washing Day washing
Mummy rubs the clothes this way
Rub-a-dub, Rub-a-dub
Up and down inside the tub

*****

Report on Educational excursion to IIT Hyderabad

Prachi

On 6th December 2024, our school embarked on an unforgettable educational excursion to the prestigious Indian Institute of Technology

(IIT) Hyderabad. This adventure offered us a treasure trove of experiences, exposing us to the pinnacle of advanced academic and research facilities.

Our journey began with an interactive session in a sleek, modern lecture hall, where the PROs greeted us warmly. They painted a vivid picture of IIT Hyderabad's vision, achievements, and innovative projects. Their insights into the institute's interdisciplinary approach, cutting-edge research, and abundant student opportunities were both enlightening and inspiring, setting an exciting tone for the day.

We explored various departments, kicking off with Chemistry and Physics, where we marvelled at advanced experiments and ground-breaking research. The Computer Science department wowed us with fascinating insights into Artificial Intelligence and the latest programming techniques, showcasing how students and professors are tackling real-world problems.

Our tour also included a visit to the sports complex, highlighting the importance of balancing academics with physical fitness. The Knowledge Resource Centre, or library, was another standout feature, with its vast collection of books, journals, and digital resources.

This visit was nothing short of extraordinary. It provided a remarkable opportunity to delve into the cutting-edge academic environment of one of India's leading institutes. It expanded our knowledge and fuelled our motivation to strive for excellence in our studies and future endeavours.

We extend our heartfelt gratitude to the IIT Hyderabad team for their warm hospitality and for providing such an enriching experience. A big thank you also goes to our Vidyalaya Principal and teachers for organizing this wonderful trip.

चित्र अनुभाग

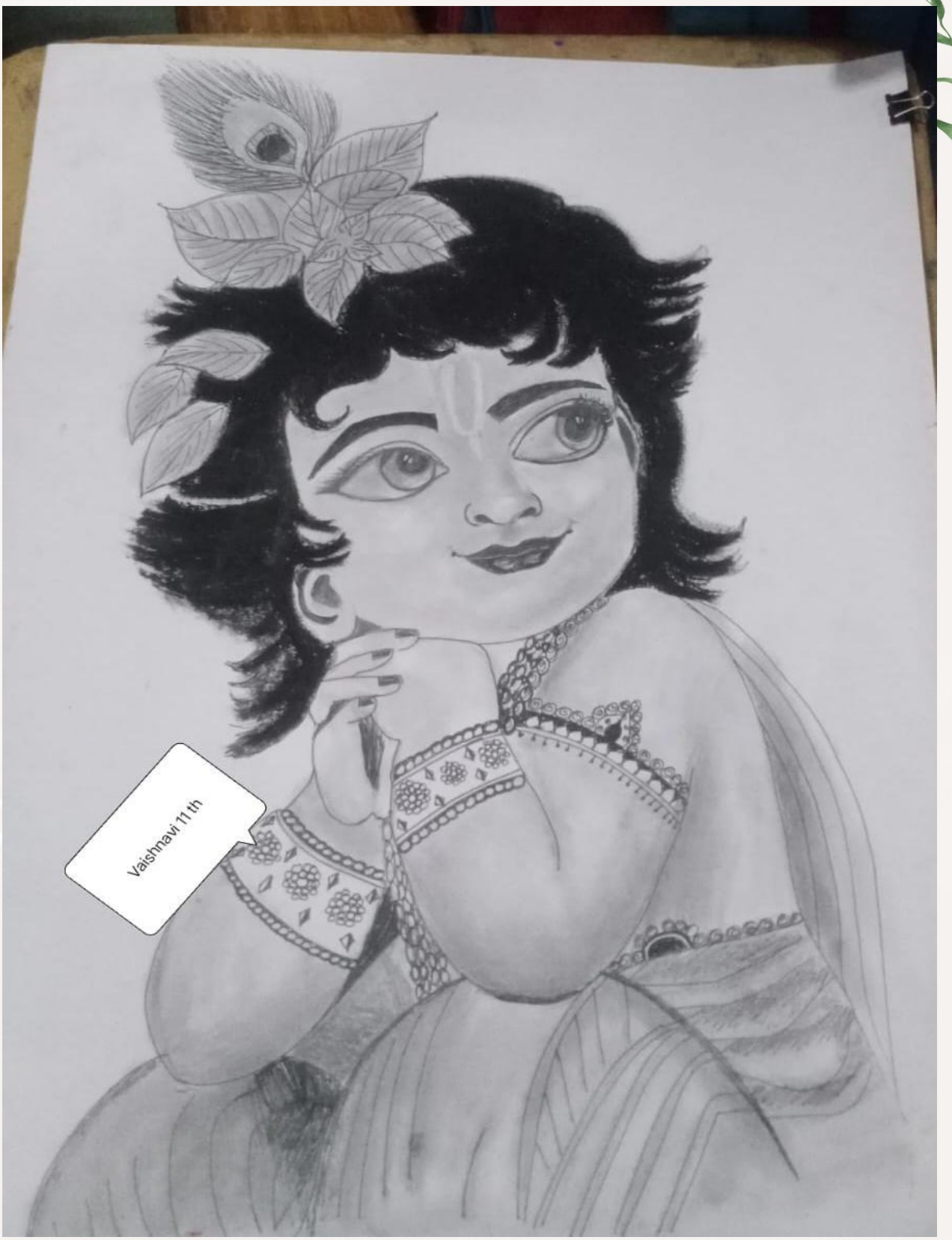



Gangotri Gupta
XI








Vaishnavi 11th

